अहीर(अभीर) जाति निर्णय

शास्त्र प्रमाण के साथ

अविकाराय शुद्धाय नित्याय परमात्मने।
सदाकरूपरूपाय विष्णुवे सर्वजिष्णवे ॥
नमो हिरण्यगर्भाय हरये शंकराय च।
वासुदेवाय ताराय सर्गस्थित्यन्तकारिणे ॥
एकानेकस्वरूपाय शूलसूक्ष्मात्मने नमः।।
अव्यक्तव्यक्तरूपाय विष्णुवे मुक्तिहेतवे॥
सर्गस्थितिविनाशनां जगतो यो जगन्मयः।
रेलवेसो नमस्तस्मै विष्णुवे परमात्मने॥

जो ब्रह्मा, विष्णु और शंकररूपसे जगत्की उत्पत्ति, स्थिति और संहारके कारण हैं तथा अपने भक्तोंको संसार सागरसे तारनेवाले हैं, उन विकाररहित, शुद्ध, अविनाशी, परमात्मा, सर्वदा एकरस, सर्वविजयी भगवान् वासुदेव विष्णुको नमस्कार है ॥ जो एक होकर भी नाना रूपवाले हैं, स्थूल-सूक्ष्ममय हैं, अव्यक्त (कारण) एवं व्यक्त (कार्य) रूप हैं तथा [अपने अनन्य भक्तोंकी] मुक्तिके कारण हैं, [उन श्रीविष्णुभगवान्को नमस्कार है]॥ जो विश्वरूप प्रभु विश्वकी उत्पत्ति, स्थिति और संहारके मूल-कारण हैं, उन परमात्मा विष्णुभगवान्को नमस्कार है ॥

@Shrikaranpurviya

शास्त्रों में अहीरों के ४ प्रकार बताए है

१. वैश्य अहीर

२. शुद्र अहीर

३. वर्णसंकर अहीर

४. म्लेच्छ अहीर

@Shrikaranpurviya

१ वैश्य अहीर

इनको गोप भी कहते है

इस पोस्ट में हम अहीरों के द्वारा दिए गए कुतर्कों का भी खंडन करेंगे जो गोप अहीर को क्षत्रिय सिद्ध करने का प्रयास करते है उनका

सबसे पहले हम शास्त्रों से गोप की उत्पति की बात कर रहते है

@Shrikaranpurviya

गोप ।

ब्रह्मवैवर्त पुराणमें लिखा है--

कृष्णस्य लोमकूपेभ्यः सद्यो गोपगणो मुनेः ।
आविर्बभूव रूपेण वेशेनैव च तत्समः ॥

(ब्र० वै० अ० ५ । श्लोक० ४१)

अर्थात् कृष्णके लोम कूपोंसे गोपोंकी उत्पत्ति हुई है, जो रूप और वेशसे उन्हींके समान थे और जब भगवान्की नन्दरायजीसे बात हुई ।

"हे वैश्येन्द्र सति कलौ न नश्यति वसुन्धरा"

(ब्र० पु० १२८ । ३३)

हे वैश्येन्द्र ! कलिका आरंम्भ होनेसे कलिधर्म प्रचलित होंगे पर वसुन्धरा नष्ट नहीं होगी,

जातिभासकर

इससे नन्दजीका वैश्य होना पाया जाता है, परन्तु कृष्णजी जब नन्दजीके घर थे तब उनके संस्कारको नन्दजीके पुरोहित न आये, गर्गजीको वसुदेवजीने भेजा यह बढे आश्चर्यकी बात है, परन्तु फिर उसी पुराणमें लिखा है जब श्रीकृष्ण गोलोकको गये तब सब गोप ग्वालोंको साथ लेते गये और अमृत दृष्टिसे दूसरे गोपोंसे गोकुलको पूर्ण किया । यथाहि--

योगेनामृतदृष्ट्या च कृपया च कृपानिधिः ।
गोपीभिश्च तथा गोपैः परिपूर्णं चकार सः ॥

(ब्रह्मवै० पु०)

भगवान् जब गोलोकको जानेलगे तब अपने साथ गोप गोपियोंको ले चलने लगे तब अमृतत्रदृष्टिद्वारा दूसरे गोपोंसे गोकुल पूर्ण किया, गोपालनमात्र इनमें एक वैश्य लक्षण पाया जाता है ।

@Shrikaranpurviya

जैसे कि अपने पिसले दृश्य में देखा जातिभास्कर में ब्रह्मवैवर्त पुराण के ब्रह्म खंड के अध्याय ५ का श्लोक ४२ का प्रमाण देते हुए गोप की उत्पति कृष्ण के रोम से बताई है साथ ही में जातिभास्कर के रचेता ब्रह्मवैवर्त पुराण के अन्य अध्याय एवं श्लोक से गोप को वैश्य वर्ण का बताया है

ओर भी ऐसे कही श्लोक मिल जायेगे जिनमें गोप को वैश्य वर्ण का बताया आइए उन्हीं में कुछ प्रमाण हम प्रस्तुत करते है

वर्तेत ब्रह्मणा विप्रो राजन्यो रक्षया भुवः ।
वैश्यस्तु वार्तया जीवेच्छूद्रस्तु द्विजसेवया ॥ २०

कृषिवाणिज्यगोरक्षा[१] कुसीदं तुर्यमुच्यते ।
वार्ता चतुर्विधा तत्र वयं गोवृत्तयोऽनिशम् ॥ २१

सत्त्वं रजस्तम इति स्थित्युत्पत्त्यन्तहेतवः ।
रजसोत्पद्यते विश्वमन्योन्यं विविधं जगत् ॥ २२

मनुष्य अपनी आजीविका चलानेवाले एक देवताको छोड़कर किसी दूसरेकी उपासना करते हैं, उससे उन्हें कभी सुख नहीं मिलता ॥ १९ ॥ ब्राह्मण वेदोंके अध्ययन-अध्यापनसे, क्षत्रिय पृथ्वीपालनसे, वैश्य वार्तावृत्तिसे और शूद्र ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्योंकी सेवासे अपनी जीविकाका निर्वाह करें ॥ २० ॥ वैश्योंकी वार्तावृत्ति चार प्रकारकी है—कृषि, वाणिज्य, गोरक्षा और ब्याज लेना। हमलोग उन चारोंमेंसे एक केवल गोपालन ही सदासे करते आये हैं ॥ २१ ॥ पिताजी! इस संसारकी स्थिति, उत्पत्ति और अन्तके कारण क्रमशः सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण हैं। यह विविध प्रकारका सम्पूर्ण जगत् स्त्री-पुरुषके संयोगसे रजोगुणके द्वारा

@Shrikaranpurviya

जैसा अपने पिसले सेलाइड में देखा हमने श्रीमदभागवतपुराण के स्कंद १० के अध्याय २४ श्लोक १९ – २० में नन्द बाबा चतुर वर्ण का कार्य बताते है फिर वह वैश्य वर्ण कर कार्य बताते है ओर कहे इसमें से हम गो पालन सदा से करते आए है सदा से करते आए है इससे यह बात स्पष्ट हो रही यह इनकी परंपरा चली आ रही वैश्य वर्ण की ओर भी कही जगह गोप का वैश्य होने का प्रमाण मिल जाता है

श्रीमदभागवतपुराण स्कंद १०, अध्याय ३१ श्लोक १

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रज: श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि । दयित दृश्यतां दिक्षु तावका-
स्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते ॥ १ ॥

हे प्रियतम, व्रज भूमि में आपके जन्म ने इसे अत्यंत गौरवशाली बना दिया है, और इसीलिए भाग्य की देवी इंदिरा सदैव यहाँ निवास करती हैं। हम, आपकी समर्पित दासियाँ, केवल आपके लिए ही अपना जीवन निर्वाह करती हैं। हम आपको सर्वत्र खोज रही हैं, अतः कृपया हमें अपना दर्शन दें।

@Shrikaranpurviya

आपने आप को क्षत्रिय सिद्ध करने वाले विधर्मियो के कुतर्क के उतर

१. यह लोग बोलते है वासुदेव और नन्द बाबा भाई थे इसलिए अहीर क्षत्रिय हुए जबकि इन मूर्खों को पूरा इतिहास ही नहीं पता देवमीढ़ की 2 पत्नियां थी एक क्षत्रिय पत्नी थी और एक वैश्य पत्नी थी क्षत्रिय पत्नी से जो संतान उत्पन्न हुई उसका नाम था शूरसेन शूरसेन के पुत्र का नाम था वासुदेव वह क्षत्रिय हुए , वैश्य पत्नी से जो संतान हुई उसका नाम था पर्जन्य उनसे जो सनातन उत्पन हुई उनमें से एक का नाम था नन्द जो वैश्य हुए वर्णसंकर होने के बाद भी यह द्विज थे क्योंकि अनुलोम वर्णसंकर का यज्ञोपवित होता है प्रतिलोम वर्णसंकर का नहीं होता सूत जाति को सौर कर ।

@Shrikaranpurviya

क्षत्रिय पिता और वैश्य माता से उत्पन संतान का वर्ण क्षत्रिय से छोटा और वैश्य से बड़ा होगा अब अब यह कन्या उत्पन करते है उस कन्या का विवाह क्षत्रिय कुल में होता फिर यह दोनों कन्या उत्पन करे उसका विवाह क्षत्रिय कुल में हो ऐसे ३ पीढ़ी तक करने के बाद वह कुल क्षत्रियत्वको प्राप्त करता है । अब अगर यह पुत्र उत्पन करे उसका विवाह वैश्य कन्या से हो फिर इन दोनों फिर पुत्र उत्पन करे उसका विवाह वैश्य कन्या से हो ऐसे ३ पीढ़ी तक करने से वह संतान वैश्यत्वकों प्राप्त करती है । पर्जन्य भी वैश्य कर्म गौ पालन में लग गए थे उन्होंने भी वैश्य कन्या से विवाह किया उनको पुत्रों की उत्पति की फिर पुत्रों ने भी वैश्य कन्या से विवाह किया इस तरह नंद बाबा का वंश वैश्यत्वों को प्राप्त किया नंद बाबा का वंश उनके भाइयों के पुत्रों द्वारा आगे बढ़ा । आगे वाली स्लाइड में हमारी बातों का प्रमाण देते है ।

@Shrikaranpurviya

मनुस्मृति अध्याय १०

ओर गौतम धर्मसूत्र अध्याय ४, सूत्र २२

(पूर्व (१०।६४) श्लोकके अनुसार सातवें जन्ममें) शूद्र ब्राह्मण ('पारशव' १०।८) शूद्रत्वको प्राप्त करता है। इसी प्रकार क्षत्रिय तथा वैश्यसे शूद्रामें उत्पन्न सन्तान (पुत्र या पुत्री) क्रमशः क्षत्रियत्व तथा वैश्यत्व रूप उत्कर्षको तथा इसी क्रमसे अपकर्षको प्राप्त करती है ॥ ६५ ॥

विमर्श—शूद्रको सप्तम जन्ममें ब्राह्मणत्व प्राप्त करनेका क्रम पहले (१०।६४) श्लोकके 'विमर्श' में स्पष्ट कर दिया गया है, अब यहांपर ब्राह्मणको शूद्रत्व पानेका क्रम कहते हैं—यदि ब्राह्मण केवल शूद्राके साथ विवाहकर पुरुषको ही उत्पन्न करे, वह पुरुष भी केवल शूद्राके साथ विवाहकर पुरुषको ही उत्पन्न करे, इस प्रकार वह ब्राह्मण पुरुष सप्तम जन्म (पीढ़ी) में केवल शूद्रत्वको प्राप्त करता है। इसी प्रकार क्षत्रिय तथा वैश्यसे शूद्रामें उत्पादित सन्तानको उत्कर्ष तथा अपकर्ष की प्राप्ति को जानना चाहिये, किन्तु 'जातिका उत्कर्ष सप्तम या पञ्चम जन्ममें जानना चाहिये' ('जात्युत्कर्षो युगे ज्ञेयः पञ्चमे सप्तमेऽपि वा'—या० स्मृ० १।९६) ऐसा महर्षि याज्ञवल्क्यके कहनेसे क्षत्रियसे (शूद्रामें) उत्पन्न सन्तानका पञ्चम जन्म (पीढ़ी) में जातिके उत्कर्ष तथा अपकर्षकी प्राप्ति को जानना चाहिये। और महर्षि याज्ञवल्क्यके उक्त वचनमें 'वा' शब्दके द्वारा' पक्षान्तरका संग्रह होनेसे वृद्ध व्याख्याके अनुरोधसे वैश्यसे शूद्रामें उत्पन्न सन्तानके तीसरे जन्ममें ही उत्कर्ष तथा अपकर्षकी प्राप्ति को समझना चाहिये। इसी न्यायसे ब्राह्मणसे वैश्यामें उत्पन्न सन्तानके पञ्चम जन्ममें, ब्राह्मणसे क्षत्रियामें उत्पन्न सन्तानका तृतीय जन्ममें और क्षत्रियसे वैश्यामें उत्पन्न सन्तानका भी तृतीय जन्ममें उत्कर्ष तथा अपकर्षकी प्राप्ति को जानना चाहिये। यह सब मनुस्मृतिके इसी श्लोककी 'मन्वर्थमुक्तावली' व्याख्यामें कुल्लूकभट्टने स्पष्ट किया है। यह जातिके उत्कर्ष तथा अपकर्षकी प्राप्ति उन–उन वर्णोंमें उत्पन्नकर अनापत्तिकालमें भी उन्हींकी जीविका करते रहनेपर होती है, यह 'जात्युत्कर्षो युगे ज्ञेयः······(या० स्मृ० १।९६)' श्लोककी वीरमित्रोदय तथा मिताक्षरा व्याख्याओंमें सविस्तर प्रतिपादित है, उसे वहीं देखना चाहिये।

याज्ञवल्क्य स्मृति अध्याय ४ श्लोक ९६

@Shrikaranpurviya

अब हमने जो बताते बताई उनका प्रमाण दे देते है तो इस चीज का प्रमाण हमको भक्ति सुधा में मिलता है ओर गोपाल चम्पू में मिलता है

गोपाल चम्पू , पूर्वभाग , अध्याय ३

और

भक्ति सुधा , प्रथम खंड

अथ कथारम्भः

"यथा—अथ सर्वश्रुतिपुराणादिकृतप्रशंसस्य वृष्णिवंशस्य वतंसः श्रीदेवमीढनामा परमगुणधामा मथुरामध्यासामास। तस्य चार्याणां शिरोमणेर्भार्याद्वयमासीत्। प्रथमा द्वितीयवर्णा, द्वितीया तु तृतीयवर्णेति। तयोश्च क्रमेण यथावदाह्वयं पुत्रद्वयं प्रथमं बभूव-शूरः,

अथ कथारम्भ यथा—

समस्त श्रुतियाँ एवं पुराणादि शास्त्र जिसकी भूरि भूरि प्रशंसा करते रहते हैं, उसी यदुवंश के शिरोमणि और विशिष्ट गुणों के स्थानस्वरूप श्रीदेवमीढ़ नामक राजा श्रीमथुराजी में निवास करते थे। उन्हीं क्षत्रियशिरोमणि महाराजाधिराज के दो भार्या थीं, पहली क्षत्रिय वर्ण की एवं दूसरी वैश्यवर्ण की थी, उन

@Shrikaranpurviya

पर्जन्य इति। तत्र शूरस्य श्रीवसुदेवादयः समुदयन्ति स्म। श्रीमान् पर्जन्यस्तु 'मातृवद्वर्णसङ्करः' इति न्यायेन वैश्यतामेवाविश्य गवामेवैश्यं वश्यं चकार; बृहद्वन एव च वासमाचचार। स चायं बाल्यादेव ब्राह्मणदर्शं पूजयति, मनोरथपूरं देयानि वर्षति, वैष्णववेदं स्निह्यति, यावद्वेदं व्यवहरति, यावज्जीवं हरिमर्चयति स्म। तस्य मातुर्वंशश्च व्याप्तसर्वदिशां विशां वतंसतया परं शंसनीयः, आभीरविशेषतया सद्भिरुदीरणादेष हि विशेषं भजते स्म ॥२३॥

तथा च मनुः—(१०।१५)

'ब्राह्मणादुग्रकन्यायामावृतो नाम जायते।
आभीरोऽम्बष्ठकन्यायामायोगव्यान्तु धिग्वणः ॥' इति ॥

'अम्बष्ठस्तु विशः पुत्र्यां ब्राह्मणाज्जात उच्यते' इति चान्यत्र। अतः पाद्मे सृष्टिखण्डादौ यज्ञं कुर्वता ब्रह्मणाप्याभीरपर्याय-गोपकन्यायाः पत्नीत्वेन स्वीकारः प्रसिद्धः। एष एव च गोपवंशः श्रीकृष्णलीलायां संवलनमाप्स्यतीति; सृष्टिखण्ड एव तत्र स्पष्टीकृतमस्ति। तस्मात् परमशंसनीय एवासौ वैश्यान्तःपातिमहाभीरद्विजवंशः" इति ॥२४॥

दोनों रानियों के क्रम से यथायोग्य दो पुत्र उत्पन्न हुए। एक का नाम शूरसेन, दूसरे का नाम पर्जन्य था। उन दोनों में से शूरसेनजी के श्रीवसुदेवजी आदि पुत्र उत्पन्न हुए। किन्तु श्रीपर्जन्यबाबा तो "मातृवद्वर्ण-संकरः" इस न्याय के कारण वैश्यजाति को प्राप्त होकर गैयाओं के आधिपत्य को ही अधीन कर गये, अर्थात् उन्होंने अधिकतर गो प्रतिपालनरूप धर्म को ही स्वीकार कर लिया, एवं वे महावन में ही निवास करते थे। और वे बाल्यकाल से ही ब्राह्मणों की दर्शनमात्र से पूजा करते थे, एवं उन ब्राह्मणों के मनोरथ पूर्ति पर्यन्त देय वस्तुओं की वृष्टि करते थे, वैष्णवमात्र को जानकर उससे स्नेह करते थे, जितना लाभ होता था उसी के अनुसार व्यवहार करते थे तथा आजीवन श्रीहरि की पूजा करते थे। उनकी माता का वंश भी सब दिशाओं में समस्त वैश्यजाति का भूषणस्वरूप होकर परम प्रशंसनीय था, विज्ञपण्डितजन भी जिनकी माता के वंश को आभीरविशेष कहकर पुकारते थे, इसीलिए यह माता का वंश उत्कर्ष विशेष को प्राप्त कर गया ॥२३॥

इस विषय में मनुजी भी कहते हैं, यथा-(१०।१५) क्षत्रिय द्वारा शूद्रकन्या से उत्पन्न 'उग्रा' कहलाती है, ब्राह्मण के द्वारा उसी उग्रा कन्या के गर्भ से 'आवृत' नामक उत्पन्न होता है। ब्राह्मण के द्वारा वैश्यपुत्री में उत्पन्न कन्या को 'अम्बष्ठा' कहते हैं, उसी अम्बष्ठा के गर्भ से ब्राह्मण द्वारा आभीर जाति का जन्म होता है। शूद्र द्वारा वैश्यपुत्री में उत्पन्न कन्या को 'आयोगवी' कहते हैं, उसी आयोगवी के गर्भ से ब्राह्मण द्वारा 'धिग्वण' का जन्म होता है। अन्यत्र भी देखा जाता है कि वैश्यपुत्री से ब्राह्मण के द्वारा जिस पुत्र का जन्म होता है उसका नाम 'अम्बष्ठ' कहते हैं। अतः पद्मपुराण में सृष्टिखण्ड के आदि में कहा है कि—ब्रह्माजी ने जिस समय यज्ञ किया उस समय उन्होंने आभीरपर्याय गोपकन्या को पत्नीरूप से ग्रहण किया है, यही बात प्रसिद्ध है। यही गोपवंश श्रीकृष्णलीला में सम्मेलन प्राप्त करेगा। यह बात भी वहीं सृष्टिखण्ड में स्पष्टरूप से उल्लिखित है। इस कारण से वैश्यजाति के अन्तर्गत यह महाआभीर जाति द्विजवंश हो गई, अतः यह गोप-वंश भी परम प्रशंसनीय है ॥२४॥

भक्तिसुधा

प्रथम खण्ड—श्रीकृष्णलीला-दर्शन

श्रीकृष्ण-जन्म

श्रीनन्दराय और देवी नन्दरानीजीका परिचय

'श्रीगोपालचम्पू' में श्रीकृष्ण-जन्मका बड़ा सुन्दर वर्णन मिलता है। श्रीकृष्णचन्द्र परमानन्दकन्दके बाल्य-सुखके उपभोक्ता श्रीमन्नन्दराय कौन थे? 'गोप' शब्दसे भी उनका व्यवहार होता है। '**सच्छूद्रौ गोपनापितौ**' इत्यादि वचनोंके आधारपर कुछ लोग उन्हें शूद्र समझ सकते हैं। वैसे तो भगवान्‌का जहाँ ही प्राकट्य हो, वही कुल धन्य है, फिर कोई भी क्यों न हो! परंतु 'श्रीगोपालचम्पू' के रचयिताने तो उन्हें क्षत्रियसे वैश्यकन्यामें उत्पन्न, अतएव वैश्य माना है। वृष्णिवंशमें भूषणस्वरूप देवमीढ़ मथुरापुरीमें निवास करते थे। उनकी दो स्त्रियाँ थीं, एक वैश्यकन्या और दूसरी क्षत्रियकन्या। क्षत्रियकन्यासे शूर हुए, जिनके वसुदेवादि हुए और वैश्यकन्यासे पर्जन्य हुए। अनुलोम संकरोंका वही वर्ण होता है, जो माताका होता है। इसी कारण पर्जन्यने वैश्यताको ही स्वीकार किया और गोपालनमें ही विशेष रूपसे प्रवृत्त हुए, जो कि वैश्य-जातिका प्रधान कर्म है, इसीलिये वे गोप भी कहे गये—

'**वृष्णिवंशावतंसः श्रीदेवमीढ़नामा परमगुण-धामा मथुरामध्यासयामास। तस्य भार्याद्वयमासीत्। प्रथमा द्वितीयवर्णा द्वितीया तृतीयवर्णा। तयोश्च क्रमेण शूरः पर्जन्य इति पुत्रद्वयं बभूव। शूरस्य वसुदेवादयः समुदयन्ति स्म। श्रीमान् पर्जन्यस्तु 'मातृवर्णवद्वर्णसङ्कर' इति न्यायेन वैश्यतामेवाविश्य गवामेवैश्यं वश्यं चकार।**'

पर्जन्य बड़े धर्मात्मा और ब्रह्म-हरिपूजनपरायण थे। उनका मातृवंश वैश्य सर्वत्र विस्तीर्ण और प्रशंसनीय था, उनमें भी वैश्यविशेष आभीर वंश था। वैश्यकी पुत्रीमें ब्राह्मणसे उत्पन्न पुत्र 'अम्बष्ठ' होता है और अम्बष्ठ-कन्यामें ब्राह्मणसे उत्पन्न 'आभीर' होता है। यह आभीर वैश्य ही होता है। ऐसे ही वैश्यकुलकी कन्यामें देवमीढ़ क्षत्रियसे उत्पन्न पर्जन्य वैश्य थे। ये ही गोपवंशरूपसे कृष्णलीलामें प्रख्यात हैं, अतएव इससे शूद्र गोप पृथक् हैं। यह तो वैश्य ही गोपालन कर्मसे गोप कहे गये। ब्रह्माने भी आभीरापरपर्याय गोप-कन्याको पत्नीत्वेन स्वीकार करके उसके साथ यज्ञ किया था। अतएव 'भागवत' में भी गर्गजीसे नन्दजीने कहा था कि इन दोनों पुत्रोंका द्विजातिसंस्कार करो—'**कुरु द्विजातिसंस्कारम्॥**' (श्रीमद्भा० १०।८।१०) कृष्णने भी '**कृषिवाणिज्य-गोरक्षा कुसीदं तुर्यमुच्यते। वार्ता चतुर्विधा तत्र वयं गोवृत्तयोऽनिशम्॥**' (श्रीमद्भा० १०।२४।२१) इत्यादिसे अपनेको गोवृत्त वैश्य कहा है।

पर्जन्यके उपनन्द, अभिनन्द, नन्द, सन्नन्द और नन्दन—ये पाँच पुत्र हुए। उनमें भी श्रीमन्नन्दराय सबके ही प्रेमास्पद थे। किसी सुमुख नामक प्रमुख गोपने श्रीमन्नन्दरायको परम धन्या, सुननेवालों,

२. शास्त्र में कृष्ण को कही जगह गोप कहा ओर बड़े बड़े कवियों ने भी कृष्ण को अहीर का पुत्र कहा है इससे यह लोग यह सिद्ध करना चाहते कृष्ण अहीर थे तो अहीर क्षत्रिय हुए 🤡 लेकिन इन लोगों को पता नहीं है कृष्ण जन्म के पूर्व पहले यशोदा के गर्भ में आए फिर योगमाया की मदद से देवकी के गर्भ में चले इसलिए कृष्ण के देवकी और यशोदा दोनों माता है इसलिए कृष्ण को गोप कहा गया है इसलिए कृष्ण गोप और क्षत्रिय दोनों हुए ,इसी तरह बलराम जी भी पहले देवकी के ही गर्भ में आए थे फिर वह योगमाया से रोहिणी के गर्भ में चले गए थे

अब कृष्ण की इस लीला का प्रमाण दे देते है त्रिपुरा रहस्य महात्म्य खंड अध्याय ३९ श्लोक ६४–६९

@Shrikaranpurviya

श्रृणु गोपकुलाऽधीश मां पराऽऽकाशरूपिणीम् ।
जानीहि त्रिविधाऽऽकारां सावित्र्याद्यात्मना स्थिताम् ॥६८॥
तत्राऽहं भारतीरूपा तोषिता तव वेश्मनि । सम्भूताऽस्मि पुनश्चाऽपि गौर्यंशेन समुद्भवा ॥६९॥
सृष्ट्यन्तरे भविष्यामि सह भ्रात्रा च विष्णुना । नन्दगोपस्त्वं भविता सर्वोत्तममहीपतिः ॥७०॥
तत्राऽहं भविता कन्या कात्यायन्यभिविश्रुता ।
एषोऽनुजो मम भवेत् साक्षान्नारायणः परः ॥७१॥
आहरिष्यति ते कीर्तिं त्रिलोकविततां शिवाम् ।
अहं विन्ध्याऽद्रिनिलया भूत्वा कलियुगे ततः ॥७२॥
जनान् दुःखपरान् सर्वानुद्धरामि पुनः पुनः । गोपीभिःपूजिता तत्र मासं ते विषये शिवा ॥७३॥
अभीष्टं सर्वलोकानां दुर्लभं प्रदिशाम्यहम् । इति प्राप्य वरं तस्यास्तुष्टा गोपा अशेषतः ॥७४॥
जग्मुः स्वनिलयानेव नत्वा देवीं सुरानपि । अथ सा परमेशानी जगामाऽन्तर्द्धिमम्बिका ॥७५॥

पराशक्ति ने गोपों के राजा से कहा, "हे गोपकुल के अधिपते ! सुन, मुझे तू सर्वोच्च आकाशरूपा सावित्री आदि रूप में स्थित त्रिविध आकृति धारण की हुई जान। उस विषय में भारतीरूप से प्रसन्न को गई तेरे घर में मैं फिर गौरी के अंश से उद्‌भूत हो आई हूँ ॥६५-६९॥

अन्य सृष्टि काल (द्वापर)में मैं अपने भाई विष्णुके साथ उत्पन्न होऊँगी और तू गोपकुलमें सबसे उत्तम महीपतिनन्द बनोगे। उस समय मैं 'कात्यायनी' नामसे विख्यात होऊँगी; यह मेरा छोटा भाई परात्मक साक्षात् नारायण है वह तेरी मङ्गलमयी त्रैलोक्य में विस्तृत कीर्ति को फैलायेगा। मैं विन्ध्याचल पर्वत में निवास कर तत्पश्चात् कलियुग में सभी दुःखमें पड़े लोगों का बार-बार उद्धार करूँगी। तेरे प्रदेशसे ग्वालिनें आ मुझ शिवाका पूजन एक मास तक करेंगी तब सम्पूर्ण लोकोंकी दुर्लभ अभीष्ट कामना पूर्ण करूँगी।" इसप्रकार देवी से वरदान प्राप्त कर सभी गोप अत्यन्त सन्तुष्ट हो भगवती देवी और देवगण को प्रणाम कर अपने-अपने निवासस्थानों को चले गये। तदनन्तर वह परमेशानी अम्बिका वहीं पर अन्तर्हित (अदृश्य) हो गई ॥ ७०-७५ ॥

सावित्री पर्वत पर विराजमान रही और गायत्री के सहित ब्रह्माने तीर्थों के शिरोमणि पुष्कर राज में फिर यज्ञकार्य

"जैसा कि माता गायत्री गोप के राजा को आशीर्वाद देती है अन्य सृष्टि काल में में अपने भाई विष्णु के साथ उत्पन होगी" फिर अगले जन्म में वहीं गोप का राजा नंद बाबा बने और विष्णु कृष्ण के रूप में प्रकट हुए योग माया के साथ फिर योग माया की मदद से वह देवकी के गर्भ में चले गए तो पद्म पुराण के सृष्टि खंड अध्याय १६ ने गायत्री देवी गोप घर में जन्म लेती उसी के पीसे की कथा उनको वह जन्म क्यों लेना पड़ा वह हमको त्रिपुरा रहस्य महात्म खंड के अध्याय ३८ और ३९ में मिलती हैं इसी में गायत्री माता बता रही हैं वह उस समय कात्यानी नाम से प्रसिद्ध होगी ओर यह बात भी सत्य क्योंकि भगवतम में गोपी कात्यानी देवी की पूजा करती है फिर वह कहती कलियुग में वह विन्ध्याचल पर्वत पर निवास करेगी और अपने भक्तों के कष्ट दूर करेगी यह बात भी सत्य क्योंकि आज देवी के सभी धामों एक विन्ध्याचल ही ऐसा धाम जिसको सबसे श्रेष्ठ माना गया है |

@Shrikaranpurviya

प्रथम श्लोक भगवतम (10.5.1) का प्रथम चतुर्थांश है – नन्दा त्वं आत्मज उत्पन्ने | अमरकोश (3.3.109) के अनुसार , आत्मा शब्द का अर्थ है "प्रयास, धैर्य, बुद्धि, स्वभाव, ब्रह्म, शरीर और अंतःकरण", और आत्मज शब्द का अर्थ है "पुत्र" (अमरकोश 2.6.27)। शाब्दिक रूप से, इसका अर्थ है "अपने शरीर से उत्पन्न"।

श्री शुकदेव स्पष्ट रूप से कहते हैं कि कृष्ण नंद से उत्पन्न हुए थे, उत्पन्न | उत्पन्न का अर्थ है जन्म। उन्होंने यह नहीं कहा कि नंद ने सोचा कि उनके यहाँ एक पुत्र उत्पन्न हुआ है। यदि कृष्ण वास्तव में यशोदा और नंद से उत्पन्न नहीं होते, तो वे कहते कि उन्हें लगा कि उनके यहाँ एक पुत्र उत्पन्न हुआ है। लेकिन वे आत्मज और उत्पन्न शब्दों का प्रयोग करके यह स्पष्ट करते हैं कि कृष्ण उनके यहाँ उत्पन्न हुए थे ।

अब कुछ और प्रमाण देते है तो गोपाल चम्पू पूर्व भाग , अध्याय ३ श्री कृष्ण जन्म रहस्य को संपूर्ण जानने के लिए पूरा अध्याय ३ पढ़ लेना चाहिए हम यहा सिर्फ मुख्य प्रमाण रखते है ।

@Shrikaranpurviya

...स्वयमाविर्बभूव,—यत्र साकारतया मातृगर्भस्थितापि माया निराकारतया तूर्ध्वगत्या तन्वा तद्वाहनतामागता; गन्धवाहश्रेणी नीलकमलदलमिव तत्र सर्वालक्षिततया तत् प्रापितवती;—या खलु पूर्वं तदाकर्षेण धर्षेण परं मातरमपि मोहेन म्लापितवती ॥१००॥

"अथ पुनस्तेन गर्भस्थेनाकारेण मातुः प्रसूतिभ्रमञ्च सम्प्रथय्य बहिरात्मानं संवलय्य प्रसूतिशय्यामेवाधिशय्य स्थितवती,—या खलु श्रीदेवकीतः श्रीरोहिण्यां सङ्कर्षणसंक्रमणेऽपि तथा प्रक्रमते स्म।" इति ॥१०१॥

अत्र च स्निग्धकण्ठेनान्तश्चिन्तितम्,—"सत्यमिदमेवाह स्म नूनम्; (भा० १०।२।९)—'अथाहमंशभागेन' इति हि मायां प्रति श्रीभगवद्वाक्यम्, (भा० १०।१।२५) 'आदिष्टा प्रभुणांशेन कार्यार्थे सम्भविष्यति' इति च देवान् प्रति ब्रह्मवचनम्; तत्र 'अंशभागेन' चतुर्भुज-रूपेणाकारभेदेनेति भगवदभिप्रायः, 'कार्यार्थे' तत्तन्मोहनाय 'अंशेन सम्भविष्यति' श्रीकृष्णस्य द्विभुजरूपेणाकारभेदेन सह मिलिष्यति सेति ब्रह्मणोऽभिप्रायः। तदेवमेव हि व्याख्यातमन्यत्र श्रीभागवततत्त्वविद्भिः,—(भा० १०।३८।३२) 'अवतीर्णौ जगत्यर्थे स्वांशेन बलकेशवौ' इत्यत्र 'स्वांशेन' मूर्तिभेदेनेति ॥१०२॥

आच्छादनपूर्वक द्विभुजरूप के आविर्भाव की इच्छा श्रीदेवकी के उत्पन्न हुई,ठीक उसी समय श्रीकृष्ण का जो अपूर्व द्विभुजरूप पहले योगमाया के सहित श्रीयशोदाजी के अन्तःकरण में आया था, वही द्विभुजरूप श्रीदेवकीजी की शय्या के पास पहुँचकर, चतुर्भुजरूप को अपने में अन्तर्हित करके स्वयं प्रगट हो गया था। पूर्वोक्त यशोदा पुत्र का उस प्रकार से संस्थापन और चतुर्भुजरूप का छिपाना आदि कार्य में माया साकार रूप से तो माता यशोदा के गर्भ में स्थित होकर भी निराकारभाव से ऊर्ध्वगतिशील शरीर अवलम्बनपूर्वक श्रीकृष्ण की वाहनरूप बनगई थी। एवं वायुसमूह जिस प्रकार कमलदल को ले जाता है, उसी प्रकार माया यशोदा पुत्र को सबके अलक्षित भाव से मथुरापुरी में ले गई। और जिस योगमाया ने पहले अपने अग्रज श्रीकृष्ण की आकर्षणरूप धृष्टता द्वारा जननी यशोदा को भी अधिक मोह से विषादयुक्त कर दिया था ॥१००॥

तदनन्तर वही योगमाया उसी गर्भस्थित आकार द्वारा अपनी माता के प्रसव भ्रम को बढ़ाकर एवं अपने को बाहर प्रगट करके प्रसूति शय्या पर शयन करके स्थित हो गई। और वही योगमाया पहले श्रीदेवकी के गर्भ से श्रीरोहिणी के गर्भ में श्रीबलराम के आकर्षणरूप कार्य में भी अदृश्यरूप से अपना पराक्रम दिखा गई ॥१०१॥

इस विषय में स्निग्धकण्ठ ने अन्तःकरण में विचार कर जो कहा, वह निश्चय ही सत्य है (भा० १०। २। ९) में योगमाया के प्रति श्रीभगवान् की उक्ति भी है कि—"पश्चात् मैं अंशभाग से अर्थात् ब्रह्मादि देवताओं या प्रकाश भेद के सहित देवकी का पुत्र होऊँगा" (भा० १० । १ । २५) में देवताओं के प्रति श्रीब्रह्माजी का वाक्य भी है, यथा—"योगमाया निजप्रभु श्रीकृष्ण के द्वारा आदिष्ट होकर देवकी के गर्भ को रोहिणी के गर्भ में ले जाना और श्रीयशोदा आदि के मोहन आदि कार्य के लिये यशोदा के गर्भ से ...

३. विधर्मी ऋग्वेद की एक ऋचा से यदु को गोप बताने के प्रयास करते हैं बिना उसका अर्थ जाने ऋग्वेद १० मंडल सूक्त ६२ मंत्र १० ऋचा १० अब इसका अर्थ देखते हैं

उत दासा परिविषे स्मद्दिष्टी गोपरीणसा. यदुस्तुर्वश्च मामहे.. (१०)

कल्याण करने वाले, गायों से युक्त एवं दास के समान यदु और तुवर्स नामक राजा मनु के भोजन के लिए पशु देते हैं. (१०)

अब इसपर शयन भाष्य भी देख रहते है

उत । दासा । परिऽविर्षे । स्मद्दिष्टी इति स्मऽर्दिष्टी। गोऽपरीणसा । यर्दुः । तुर्वः । च। ममहे ॥ १० ॥

उत अपि च स्मद्दिष्टी कल्याणादेशिनो गोपरीणसा गोपरीणसौ गोभिः परिवृतौ बहुगवादि-युक्ता दासा दासवत् प्रेप्यवत् स्थिती तेनाधिष्ठितः यदुः चतुर्वच एतनामको राजर्षी परिविषे अस्य सावणैर्मनोर्मोजनाय ममहे पशुन्प्रयच्छतः । प्रत्येकमन्वयादेकवचनम् ॥

यह मंत्र एक प्रकार की देव-प्रशंसा है, जिसमें कहा गया है कि देवता (या ऋषियों के माध्यम से देवता) अपनी कृपा से दासवत् लोगों को भी संतुष्ट करते हैं जब वे समृद्ध होते हैं, और यदु व तुर्वश जैसे राजर्षियों ने उनकी स्तुति करके समृद्धि पाई या उन्हें दान किया।

तो न अर्थ में न भाष्य में कही भी यदु को गोप नहीं कहा

@Shrikaranpurviya

४. कलियुग में कही सारे अहीर राजा हुए है उससे यह लोग अपने आप को क्षत्रिय सिद्ध करने का प्रयास करते है तो महाभारत में पहले ही इसकी भविष्य वाणी मिलती है।

बहवो म्लेच्छराजानः पृथिव्यां मनुजाधिप ॥ ३४ ॥
मृषानुशासिनः पापा मृषावादपरायणाः ।
आन्ध्राः शकाः पुलिन्दाश्च यवनाश्च नराधिपाः ॥ ३५ ॥
काम्बोजा बाह्लिकाः शूरास्तथाऽऽभीरा नरोत्तम।
न तदा ब्राह्मणः कश्चित् स्वधर्ममुपजीवति ॥ ३६ ॥
क्षत्रियाश्चापि वैश्याश्च विकर्मस्था नराधिप।

विपरीत हो जाते हैं, तब प्रलयका पूर्वरूप आरम्भ हो जाता है। उस समय इस पृथ्वीपर बहुत-से म्लेच्छ राजा राज्य करने लगते हैं ॥ ३४ ॥

छलसे शासन करनेवाले, पापी और असत्यवादी आन्ध्र, शक, पुलिन्द, यवन, काम्बोज, बाह्लीक तथा शौर्यसम्पन्न आभीर इस देशके राजा होंगे। नरश्रेष्ठ ! उस समय कोई ब्राह्मण अपने धर्मके अनुसार जीविका चलानेवाला न होगा ॥ ३५-३६ ॥

नरेश्वर ! क्षत्रिय और वैश्य भी अपना-अपना धर्म छोड़कर दूसरे वर्णोंके कर्म करने लगेंगे। सबकी आयु कम

[MAHABHARAT, VAN PARVA,CH-188, VERSE- 34-36]

(Mb. Sabhā. 51.11-13). Once it was prophesied by Mārkaṇḍeya Ṛṣi that low-caste people like Ābhīras and Śakas would become rulers of States in different parts of Bhārata during Kaliyuga (Mb. Vana. 188.35-36). In the

@Shrikaranpurviya

२. शुद्र अहीर

अब हम अहीरों के दूसरे प्रकार शुद्र अहीर का प्रमाण रखते है पहले तो यह जान रहते है शुद्र अहीर अहीर किसको कहते है और यह क्या करते है

महाभारत सभा पर्व, अध्याय 32 - श्लोक 9-10

सिन्धुकूलाश्रिता ये च ग्रामणीया महाबलाः ॥ ९ ॥
शूद्राभीरगणाश्चैव ये चाश्रित्य सरस्वतीम् ।
वर्तयन्ति च ये मत्स्यैर्ये च पर्वतवासिनः ॥ १० ॥

समुद्रके तटपर रहनेवाले जो महाबली ग्रामणीय (ग्राम शासकके वंशज) क्षत्रिय थे, सरस्वती नदीके किनारे निवास करनेवाले जो शूद्र आभीरगण थे, मछलियोंसे जीविका चलानेवाले जो धीवर जातिके लोग थे तथा जो पर्वतोंपर वास करनेवाले दूसरे-दूसरे मनुष्य थे, उन सबको नकुलने जीतकर अपने वशमें कर लिया ॥ ९-१० ॥

@Shrikaranpurviya

महाभारत शल्य पर्व , अध्याय 37 - श्लोक 1

वैशम्पायन उवाच

ततो विनशनं राजन् जगामाथ हलायुधः ।
शूद्राभीरान् प्रति द्वेषाद् यत्र नष्टा सरस्वती ॥ १ ॥
तस्मात् तु ऋषयो नित्यं प्राहुर्विनशनेति च ।

वैशम्पायनजी कहते हैं--राजन् ! उदपानतीर्थसे चलकर हलधारी बलराम विनशनतीर्थमें आये, जहाँ (दुष्कर्म-परायण) शूद्रों और आभीरोंके प्रति द्वेष होनेसे सरस्वती नदी विनष्ट (अदृश्य) हो गयी है। इसीलिये ऋषिगण उसे सदा विनशनतीर्थ कहते हैं ॥ १ ॥

व्यास स्मृति, अध्याय 3 श्लोक 49-51

र्मादिदूषिताः ॥ अश्रद्दधानाः पतिता भ्रष्टाचारादयश्च ये ॥ अभोज्यान्नाः स्यु-रन्नादो यस्य यः स्यात्स तत्समः ॥ ५० ॥

नापितान्वयमित्रार्द्धसीरिणो दासगोपकाः ॥ शूद्राणामप्यमीषां तु भुक्त्वान्नं नैव दुष्यति ॥ ५१ ॥

नाई, वंशका मित्र, अर्द्धसीरी दास और गोप इन शूद्रोंके अन्नको खाकर भी दोष नहीं लगता ॥ ५१ ॥

@Shrikaranpurviya

दासनापित्तगोपालकुलमित्रार्द्धसीरिणः ।
एते शूद्रेषु भोज्यान्ना यश्चात्मानं निवेदयेत् ॥291॥
शूद्रकन्यासमुत्पन्न ब्राह्मणेन तु संस्कृतः ।
संस्कृतस्तुं भवेद्दास्यो ह्ययस कारैस्तु नापित ॥292॥

पारासर स्मृति

करने से तथा द्रुपद मन्त्र के सौ जप करने से शुद्ध हो जाता है। दास नाई-गोपाल (अहीर) कुल मित्र और खेती के काम में आधे का साझी ये शूद्र भोज्य अन्न वा होते हैं और जो भी अपने आपको निवेदन करें ॥290-291॥

(3) वर्द्धकी नापितो गोपः आशापः कुम्भकारकः
वीवक किरात कायस्थ मालाकर कुटिम्बिनः
एते चान्ये च वहवः शुद्रा भिन्नः स्वकर्मभिः– 10
चर्मकारः भटो भिल्लो रजकः पुष्ठकारो नटः
वरटो भेद चान्डाल दासं स्वपच कोलकाः– 11
एते अन्त्यज समा ख्याता ये चान्ये च गवारानः
एषाम सम्भाषणाद स्नानं दशनादर्क वीक्षणमः–12

अर्थ– बढ़ई, नाई, अहीर, अशाप, कुम्हार, तेली, मुशहर, कायस्थ, माली और उनके कुटुम्बी ये सब अपने–आपने कर्मो से भिन्न–भिन्न प्रकार से शुद्र हैं। चमार, भट, भील, धोबी, पुस्कर, नट वरट, मेद, चाण्डाल, दुसाध, दास, भंगी, और काले लोग ये सब अन्त्यज कहे जाते हैं और मांस भक्षण करते हैं, वे भी अन्त्यज है। ब्राह्मण को इनके साथ बात करने पर स्नान करना चाहिए और इनका मुख देख लेने पर सुर्य का दर्शन करना चाहिए तभी शुद्धि होती हैं।

–व्यास स्मृति, अध्याय–1 श्लोक न० 10,11,12

३. वर्णसंकर अहीर

वर्णसंकर अहीर कौन अब शास्त्र से यह देखते है

मनुस्मृति अध्याय १०

अन्यान्य वर्णसङ्कर जातियोंका कथन—

ब्राह्मणादुग्रकन्यायामावृतो नाम जायते ।
आभीरोऽम्बष्ठकन्यायामायोगव्यां तु धिग्वणः ॥ १५ ॥

ब्राह्मणसे 'उग्र' (१०।९) 'अम्बष्ठ' (१०।८) तथा 'आयोगव' (१०।१२) की कन्याओंमें उत्पन्न पुत्र क्रमशः 'आवृत, आभीर और धिग्वण' संज्ञक होते हैं ॥

यही वाक्य हमें याज्ञवल्क्य स्मृति ओर अन्य स्मृतियों में प्राप्त होता है
जो गोप अहीर या शुद्र अहीर है वह भी अगर अन्य जातियों में विवाह करले तो उनको भी वर्णसंकर अहीर पुत्र होता है ।

@Shrikaranpurviya

एक ही गोत्र में विवाह करने पर भी संतान वर्णसंकर होती है

वर्णसङ्कर सन्तानके उत्पन्न होनेमें कारण—

व्यभिचारेण वर्णानामवेद्यावेदनेन च।
स्वकर्मणां च त्यागेन जायन्ते वर्णसंकराः ॥ २४ ॥

ब्राह्मणादि वर्णोंके (परस्पर-परस्त्रीके साथ) व्यभिचारसे, एक गोत्रमें विवाह करनेसे और यज्ञोपवीत संस्कार आदि अपने कर्मोंको छोड़नेसे 'वर्णसङ्कर' सन्तानें उत्पन्न होती हैं ॥ २४ ॥

'व्रात्य' संज्ञक पुत्र—

द्विजातयः सवर्णासु जनयन्त्यव्रतांस्तु यान्।
तान्सावित्रीपरिभ्रष्टान्व्रात्यानिति विनिर्दिशेत् ॥ २० ॥

द्विज (१०।४) द्वारा अपने समान वर्णवाली स्त्रियोंमें उत्पादित यज्ञोपवीत संस्कारके अयोग्य एवं सावित्रीसे भ्रष्ट पुत्रोंको 'व्रात्य' कहा जाता है ॥ २० ॥

@Shrikaranpurviya

४. म्लेच्छ अहीर

अब मेलछ अहीर कौन है इनके लक्षण क्या होता है यह क्या कार्य करते है

म्लेच्छ अहीर यह चोर डाकू होते , दुष्ट आचरण होते है तमोगुणी होते है यह धर्म विरुद्ध आचरण करने वाले होते है , अगर कोई अहीर(गोप,शुद्र,वर्णसंकर) अपना धर्म त्याग कर अन्य पंथ में चला जाए तो वह वो म्लेच्छ बन जाता हैं २० वर्ष के अंदर वह वापस हिंदू ओर अपने आश्रम धर्म आ सकता देवल स्मृति के प्राश्चित विधान को करके २० वर्ष से अधिक हो जाने पर वह हिंदू बन सकता है लेकिन फिर उसकी योनि म्लेच्छ ही मानी जाएगी वह अपने आश्रम धर्म में वापस नहीं आ पाएगा उसके पास वह ही अधिकार होगे जो एक म्लेच्छ के पास होते है उसकी जो संतान उत्पन्न होगी वह भी म्लेच्छ होगी |

@Shrikaranpurviya

आप रामायण देखोगे तो वाल्मीकि जी भी म्लेच्छ अहीरों के संगत से ही डाकू बने थे

रामायण युद्धकांड 22 वां सर्ग, श्लोक 32

भी प्रख्यात है ॥ ३१ ॥

उग्रदर्शनकर्माणो बहवस्तत्र दस्यवः ।
आभीरप्रमुखाः पापा पिबन्ति सलिलं मम ॥ ३२ ॥

वहाँ पर भयङ्कर रूप वाले तथा भयङ्कर कार्य करने वाले पापी अहीर आदि डाकू रहते हैं, जो मेरा जल पिया* करते हैं ॥ ३२ ॥

तैस्तु संस्पर्शनं प्राप्तैर्न सहे पापकर्मभिः ।
अमोघः क्रियतां राम तत्र तेषु शरोत्तमः ॥ ३३ ॥

महाभारत मूसल पर्व, अध्याय 7 ,श्लोक 47

ततस्ते पापकर्माणो लोभोपहतचेतसः ।
आभीरा मन्त्रयामासुः समेत्याशुभदर्शनाः ॥ ४७ ॥

लोभसे उनके चित्तकी विवेकशक्ति नष्ट हो गयी । उन अशुभदर्शी पापाचारी आभीरोंने परस्पर मिलकर सलाह की ॥

अयमेकोऽर्जुनो धन्वी वृद्धबालं हतेश्वरम् ।
नयत्यस्मानतिक्रम्य योधाश्चेमे हतौजसः ॥ ४८ ॥

@Shrikaranpurviya

Matsya Purāṇam

तेभ्योऽपरेऽपि ये त्वन्ये ह्युत्पत्स्यन्ते नृपा: पुन:।
क्षत्रा: पारशवा: शूद्रास्तथाऽन्ये ये बहिश्चरा:॥७५॥
अन्ध्रा: शका: पुलिन्द्राश्च चूलिका यवनास्तथा।
कैवर्ताभीरशबरा ये चान्ये म्लेच्छसंभवा:।
पर्यायत: प्रवक्ष्यामि नामतश्चैव तान्नृपान्॥७६॥

Besides those, other kings will also arise, belonging to the castes of Kṣattrās, Pārasavas, and Śudrās as well as those who are outside these [foreigners]; namely, Andhras, Śakās, Pulindas, Chulikās, Yavanās, Kaivartas, Abhīras and Śabaras, and those having a Mlechchha origin. I shall declare those kings, according to their succession and by name. —75-76.

बहुत शुभहै उन भविष्यकालमें होनेवाले सम्पूर्ण राजाओंको ७४ और उन राजाओंसे उत्पन्नहोनेवाले अन्यराजाओंको ब्राह्मण क्षत्रियशूद्रोंको अंधवंशके राजाओंको-अंध-शक पुलिन्द-चूलिक—यवन—कैवर्त-आभीर-शबर जैसे म्लेच्छ राजाओंको पृथक् २ नामसहित वर्णन करताहूं ७५। ७६ इनसबमें पहला अधिसोम कृष्णराजाहोताभया उसके वंशके भविष्य राजाओंको प्रथम वर्णनकरताहूं ७७ ...

The Matsya Purana entirely describes the Malechha origin of the Abhirs/Ahirs, who are described as non-Sanskrit speaking Malechhas separate from the Kshatriya and Brahmin kings. This makes it clear that they were neither Yaduvanshis nor Kshatriyas.

[MATASYA PURAN, CHAPTER 50, PART -1,VERSE 76]

@Shrikaranpurviya

बृहद नारद पुराण अध्याय १४ श्लोक ५६–५७

नमेद्यः शूद्रसंस्पृष्टं लिङ्गं वा हरिमेव वा ।
स सर्व्वयातनाभोगी यावदाचन्द्रतारकम् ॥ ५५ ।
पाषण्डपूजितं लिङ्गं नत्वा पाषण्डतां व्रजेत् ।
राजन्वेदविदो वापि सर्व्वशास्त्रार्थविद्यदि ॥ ५६ ।
आभीरपूजितं लिङ्गं नत्वा नरकमश्नुते ॥ ५७ ।

"One who salutes a Liṅga or (an image of) Hari touched by a Śūdra, undergoes all (kinds of) suffering till the moon and the stars exist (14. 55).

... ...

"By saluting a Liṅga worshipped by an Ābhīra one goes to hell, O king, even though one may be versed in the Vedas or know the meanings of all Śāstras (14. 56b-57).

Gopa as a man of low origin.[6] The *Brihannāradīyapurāṇa* further testifies that the Abhiras were not entitled to worship the gods. The *Brihannāradīyapurāṇa* records that " by saluting a *linga* worshipped by an Abhira, one goes to hell........ even though one be versed in the Vedas or knows the meanings of all the *śāstras*." The high class people have been warned by *Brihannāradīyapurāṇa* that " one who salutes a *linga* or (an image of) *Vishnu* worshipped by an Abhira meets with destruction."[1] This extreme contemptuous view of the *Brihannāradīyapurāṇa*

@Shrikaranpurviya

ABHIRA AS MAHASHUDRA (LOWER THAN SHUDRA = MALECHHA)

वर्त्तते । न समुदायो महतोशूद्रारूप: । कथं पुनर्जातिरित्युच्यमाने महत्-
पूर्वस्य प्राप्ति: ? यत: प्रतिषेध उच्यत इत्याह । महाशूद्रशब्दो ह्याभी-
रजातिवचन इति । महाशूद्रशब्दएव हि समुदायो जातौ वर्त्तते ।
अतएव महाशूद्रीति जातेरस्त्रीत्यादिना (४।१।६३) ङीष् भवति । नन्वेवमपि
नाम्न्येव टाप: प्राप्ति । शूद्रशब्दाद्धि प्रत्यय उत्पद्यमान: कथं महाशूद्रात्

Mahāśūdrī, according to Amara, means *ābhīrī*, cowherdess. According to Kāśikā "the word mahāśūdra denotes a man of *ābhīra* caste."† The

* क: पुनरार्यनिवास: । ग्रामो घोषो नगरं संवाह इति

† महाशूद्रशब्दो ह्याभीरजातिवचन: ।

[KASIKA VIVARANA PANCHIKA,CH-4,PT. 2,VERSE 63]

started their inroads upon the Aryans. They were nomadic herdsmen living in the forest, hence thay had no connection with the Aryan *varṇas*.

Evidently the Aryans considered them as *Śūdras* who were outside the pale of the Aryan society. Due to their considerable importance they were regarded better than the ordinary Śūdras. *Kaśika*, a commentator of *Mahabhashya* describes them as *mahāśūdras*.[3]

इस शास्त्र पे पतंजलि ऋषि का भाष्य है इसमें महाशूद्र से अर्थ म्लेच्छ का ही है ।

@Shrikaranpurviya

श्री कृष्ण की पत्नियों का अर्जुन से म्लेच्छ अहीरों ने अपहरण किया था

मनो मे दीर्यते येन चिन्तयानस्य वै मुहुः ।
पश्यतो वृष्णिदाराश्च मम ब्रह्मन् सहस्रशः ॥ १६ ॥
आभीरैरनुसृत्याजौ हृताः पञ्चनदालयैः ।

जब मैं उस घटनाका चिन्तन करता हूँ, तब बारंबार मेरा हृदय विदीर्ण होने लगता है । ब्रह्मन् ! पंजाबके अहीरोंने मुझसे युद्ध ठानकर मेरे देखते-देखते वृष्णिवंशकी हजारों स्त्रियोंका अपहरण कर लिया ॥ १६½ ॥

[Mahabharat, Mausal parv, Ch-7, Verse 16]

स एष कृष्णो वार्ष्णेयः पुराणपुरुषो विभुः ।
आस्ते हरिरचिन्त्यात्मा क्रीडन्निव महाभुजः ॥५४॥

ये वृष्णिकुल-भूषण महाबाहु श्रीकृष्ण ही वे सर्वव्यापी, अचिन्त्यस्वरूप, पुराण-पुरुष श्रीहरि हैं, जो पहले बालरूपमें

[Vishnu,Purana, Vol 5, Ch- 38 ,Verse 30-51]

यततो मम नीतानि दस्युभिर्लगुडायुधैः ॥ ५१
आनीयमानमाभीरैः कृष्ण कृष्णावरोधनम् ।
हृतं यष्टिप्रहरणैः परिभूय बलं मम ॥ ५२

दस्युगण अपनी लाठियोंके बलसे ले गये ॥ ५१ ॥ हे कृष्णद्वैपायन ! लाठियाँ ही जिनके हथियार हैं उन आभीरोंने आज मेरे बलको कुण्ठितकर मेरे द्वारा साथ लाये हुए सम्पूर्ण कृष्ण-परिवारको हर लिया ॥ ५२ ॥ ऐसी अवस्थामें

प्रेक्षतस्तस्य पार्थस्य वृष्ण्यन्धकवरस्त्रियः ।
जग्मुरादाय ते म्लेच्छाः समस्ता मुनिसत्तम ॥ २८

हे मुनिश्रेष्ठ ! इस प्रकार अर्जुनके देखते-देखते वे म्लेच्छगण वृष्टि और अन्धकवंशकी उन समस्त स्त्रियोंको लेकर चले गये ॥ २८ ॥ तब सर्वदा जयशील अर्जुन अत्यन्त

अहोऽतिबलवद्दैवं विना तेन महात्मना ।
यदसामर्थ्ययुक्तेऽपि नीचवर्गे जयप्रदम् ॥ ३१

अहो ! दैव बड़ा प्रबल है, जिसने आज उन महात्मा कृष्णके न रहनेपर असमर्थ और नीच अहीरोंको जय दे दी ॥ ३१ ॥

@Shrikaranpurviya

आज के गोप अहीर कौनसे वर्ण के में आयेगे

आज के ज्यादातर गोप अहीरों में यज्ञोपवीत ओर संध्या उपासन परंपरा लुप्त हो चुकी है कुछ ही गोप अहीर बचे है जिनके यहां आज भी यज्ञोपवीत परंपरा है जैसे कृष्णौत यादव, और गुजरात में पाए जाने वाले गोप इनके यहां आज भी उपनयन परंपरा देखने को मिलता इसलिए यह वैश्य वर्ण में आएगे कुछ कृष्णौत यादव शुद्र अहीरों की देखा देखी में अपने आप को क्षत्रिय समझने लगे है जो कि अनुचित है ओर जो अहीरों में यज्ञोपवीत का लोप हो गया है वह शुद्र में आएगे जिनमें अभी भी यज्ञोपवीत परंपरा बची है वह वैश्य वर्ण में आएगे।

@Shrikaranpurviya

अध्याय १०

क्रियालोपसे जातिहीनता—

शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः क्षत्रियजातयः ।
वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणादर्शनेन च ॥ ४३ ॥

इन क्षत्रिय जातियोंने धीरे धीरे क्रिया (यज्ञोपवीत संस्कार तथा सन्ध्यावन्दनादि क्रिया) के लोप होने (छूट जाने) तथा ब्राह्मणोंके दर्शन (के विना यज्ञ, अध्ययन तथा प्रायश्चित्तादि) के अभाव होनेसे लोकमें शूद्रत्वको प्राप्त कर लिया है ॥ ४३ ॥

यह मनुस्मृति का एक श्लोक जिसमें मनु के अनुसार कुछ क्षत्रिय जातियों ने शुद्रत्वकों को प्राप्त कर लिया और अगले श्लोक में उनका नाम लिखा है इसी प्रकार किसी भी द्विज जाति में यज्ञोपवीत संध्या की परंपरा समाप्त हो जाने से वह भी शुद्रत्वकों को प्राप्त कर लेती है ओर आज के ज्यादातर अहीरों में क्रिया का लोप हो चुका है इसी प्रकार बंगाल में भी २ जाति बची है एक ब्राह्मण एक शुद्र कलियुग के अंत में सिर्फ यही दोनों जाति रहेगी तभी भगवान कल्कि क्षत्रिय कुल में नहीं ब्राह्मण कुल में जन्म लेगे

@Shrikaranpurviya

भगवान कृष्ण भूलोक में आए उन्होंने द्वारका में चतुर्भुज रूप में रहते थे, एक साथ १६,१०८ पत्नियों के साथ १६,१०८ रूप बना कर रहे

भगवान राम ने जो किया ओर जो ज्ञान दिया वह करने योग है लेकिन कृष्ण ने जो किया वह आम मनुष्य नहीं कर सकता उनका ज्ञान ही लेने योग है भगवान कृष्ण भूलोक पे भगवान की ही तरह रहे है इसलिए उनको किसी जाति विशेष नहीं जोड़ना चाहिए वर्ण मनुष्यों का होता है भगवान का नहीं जाति विशेष से जोड़ोगे तो उनको कौनसा वर्ण का कहोगे वह यशोदा और देवकी दोनों के गर्भ में आए है दोनों वर्णों के कर्म करे है उन्होंने इसलिए कृष्ण को किसी वर्ण से नहीं जोड़ना चाहिए।

यह लेख शास्त्रनिष्ठ व्यक्तियों के लिए लिखा गया है।

ओर भी कोई प्रश्न हो तो

@shrikaranpurviya

इंस्टाग्राम पेज पर डायरेक्ट मैसेज करे

@Shrikaranpurviya

नान्तोऽस्ति यस्य न च यस्य समुद्भवोऽस्ति वृद्धिर्न यस्य परिणामविवर्जितस्य ।
नापक्षयं च समुपैत्यविकारि वस्तु यस्तं नतोऽस्मि पुरुषोत्तममीशमीड्यम्।।
तस्यैव योऽनु गुणभुग्बहुधैक एव शुद्धोऽप्यशुद्ध इव भाति हि मूर्तिभेदैः ।
ज्ञानान्वितः सकलसत्त्वविभूतिकर्ता तस्मै नमोऽस्तु पुरुषाय सदाव्ययाय
ज्ञानप्रवृत्तिनियमैक्यमयाय पुंसो भोगप्रदानपटवे त्रिगुणात्मकाय ।
अव्याकृताय भवभावनकारणाय वन्दे स्वरूपभवनाय सदाजराय ॥
व्योमानिलाग्निजलभूरचनामयाय शब्दादिभोग्यविषयोपनयक्षमाय ।
पुंसः समस्तकरणैरुपकारकाय व्यक्ताय सूक्ष्मबृहदात्मवते नतोऽस्मि ।।
इति विविधमजस्य यस्य रूपं
प्रकृतिपरात्ममयं सनातनस्य ।
प्रदिशतु भगवानशेषपुंसां हरिरपजन्मजरादिकां स सिद्धिम् ॥

जिन परिणामहीन प्रभुका आदि, अन्त, वृद्धि और क्षय कुछ भी नहीं होता, जो नित्य निर्विकार पदार्थ हैं उन स्तवनीय प्रभु पुरुषोत्तमको मैं नमस्कार करता हूँ ॥ जो उन्हींके समान गुणोंको भोगनेवाला है, एक होकर भी अनेक रूप है तथा शुद्ध होकर भी विभिन्न रूपोंके कारण अशुद्ध (विकारवान्) -सा प्रतीत होता है और जो ज्ञानस्वरूप एवं समस्त भूत तथा विभूतियोंका कर्ता है उस नित्य अव्यय पुरुषको नमस्कार है ॥ जो ज्ञान (सत्त्व), प्रवृत्ति (रज) और नियमन (तम) की एकतारूप है, पुरुषको भोग प्रदान करनेमें कुशल है, त्रिगुणात्मक तथा अव्याकृत है, संसारकी उत्पत्तिका कारण है, उस स्वतः सिद्ध तथा जराशून्य प्रभुको सर्वदा नमस्कार करता हूँ ॥ जो आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथिवीरूप है, शब्दादि भोग्य विषयोंकी प्राप्ति करानेमें समर्थ है और पुरुषका उसकी समस्त इन्द्रियोंद्वारा उपकार करता है उस सूक्ष्म और विरारूप व्यक्त परमात्माको नमस्कार करता हूँ ॥ इस प्रकार जिन नित्य सनातन परमात्माके प्रकृति-पुरुषमय ऐसे अनेक रूप हैं वे भगवान् हरि समस्त पुरुषोंको जन्म और जरा आदिसे रहित (मुक्तिरूप) सिद्धि प्रदान करें ॥

@Shrikaranpurviya